ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

काशी विश्वनाथ मंदिर

डा0 मन्जू जोहरी
विभागाध्यक्ष इतिहास
डी0 वी0 कालेज, उरई
मीरा झा
शोध छात्रा

बनारस नगर की पृष्ठभूमि में अनेंको महत्वपूर्ण परम्पराएं तथा मान्यताएं छिपी हुई हैं। यह एक ऐसा नगर है जहॉ पूर्व तथा पश्चिम की संस्कृतियों का समन्वय अव्यक्त रुप से देखने को मिलता है। यहॉ पर हिन्दु सभ्यता, संस्कृति तथा जैनों एवं बौद्ध धर्मावलम्बियों का समुचित प्रभाव प्राचीनतम अवशेषों की धरोहर के रुप मे आज भी विद्यमान है। आधुनिक युग में भी बनारस सम्पूर्ण भारत में प्रचलित कलाओं संस्कृतियों तथा विभिन्न विचारों को मानने वाले लोगों का संगम स्थल है। यहॉ पर भारत के अतिरिक्त विश्व के अन्य बहुत से देशों के लोग आकर स्थाई रुप से रहने लगे है। जिनमें नेपाल के लोगों की संख्या सर्वाधिक है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस नगर के सामाजिक,सांस्कृतिक समन्वय का ज्वलन्त प्रमाण है। वाराणसी, बनारस, काशी किसी नाम से संवोधित करें पर विश्वनाथ मंदिर के अभाव में सभी उद्वोधन अपूर्ण है। मंदिर का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव हैं जिसे इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास है।

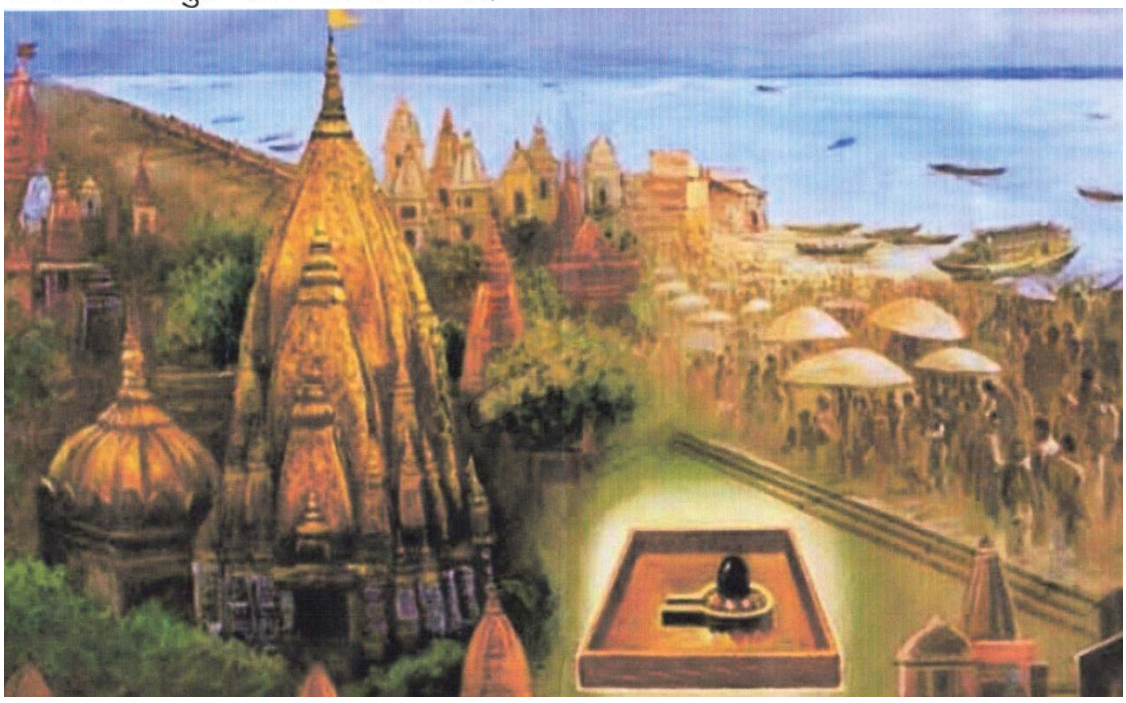

बनारस आर्यो का एक प्राचीनतम नगर है। आर्यो की प्रथम व्यवस्था जो 1000 ई0 पूर्व में हुई थी, के द्वारा बनारस नगर के संम्बन्ध में सर्वप्रथम जानकारी मिलती है।[1] ऐसी मान्यता की उस समय यहॉ की प्राकृतिक सुरक्षा तथा उपजाऊ भूमि ने लोगों को आकर्शित किया जिसके कारण गंगा तथा वरुणा के बीच असी क्षेत्र में इस नगर का निर्माण हुआ साथ ही गंगा ने भारत के विभिन्न भागों से यातायात

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

तथा व्यापार का मार्ग प्रशस्त कर नगर की उन्नति में योगदान दिया। उपनिशदों के अनुसार बनारस आर्यो की संस्कृति तथा धर्म का प्रमुख केन्द्र था।(2) आगे चलकर काशी राज्य की राजधानी के रुप में प्रसिद्ध हुआ।(3) राज्य की राजधानी के रुप में प्रसिद्ध काशी राज्य का भारत के हिन्दु संस्कृति और धर्म के रक्षक के रुप में अत्यधिक ख्याति थी। यहीं कारण था कि प्राचीन काल से ही बनारस आध्यात्मिक, धार्मिक, विद्या का केन्द्र समझा जाता था। अशोक के समय में काशी राज्य पर बौद्धिष्टों का प्रभाव अधिक हुआ और सारनाथ एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। 12 हवी भादी में गहवार भाासकों ने हीं काशी में स्वतंत्र राज्य स्थापित किया।(4) अन्यथा यह नगर कौशल राज्य के अधीन ही एक रियासत के रुप में था जिसका प्रभाव बनारस के इतिहास पर स्पश्ट दिखाई पड़ता है।

विश्वनाथ मंदिरः– बनारस नगर की प्रसिद्धि का सबसे महत्वपूर्ण कारण काशी का विश्वनाथ मंदिर है। काशी विश्वनाथ के संबंध में सर्वाधिक सामग्री 'काशी खण्ड' नामक ग्रंथ में मिलता है। पुराणों में स्कन्द पुराण अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। काशी खण्ड स्कन्द पुराण का ही एक भाग है। इसमें बनारस के देवालय, घाटों उससें संबंधित घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। काशी खण्ड में विश्वेश्वर व विश्वेष दो नाम आतें हैं।(5) इन्ही में से एक का नाम आगे चलकर विश्वनाथ हो गया। पद्मपुराण में ज्ञानवापी के समीप ही विश्वनाथ मंदिर को बताया है परन्तु बनारस गजेटियर वार्त्ता करने पर ज्ञात होता है कि विश्वनाथ का प्राचीन मंदिर ज्ञानवापी मस्जिद के स्थान पर नही हो सकता है।

सोचनीय विषय है कि कौनसा स्थान है जहॉ पर प्राचीन विश्वनाथ मंदिर था। इस बात की विवेचना में हमें आदिविश्वेसर नाम से सहायता मिलती है। काशी खण्ड के वर्णन के अनुसार यह स्थान दुंदिराज, ज्ञानवापी व दण्डपाणि के उत्तर में है। इस आधार पर यह निश्चित हो जाता है कि आदिविश्वेसर के पूर्व की ओर स्थित बीबी रजिया की मस्जिद का घेरा प्राचीन वि" वेसर की भूमि है।(6) वास्तव में वर्तमान समय में विश्वनाथ मंदिर तथा उसके समीप की स्थिती देखने तथा ऐतिहासिक सामग्री के मूल्यांकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्वेसर मंदिर के मूल स्थान से कुछ गज की दूरी पर आदि– विश्वेसर का मंदिर है और एक दीवाल मंदिर और मस्जिद के मध्य में स्थित है जो दोनों के क्षेत्रों को अलग करती है। इसी मस्जिद को बीबी रजिया का मस्जिद कहते हैं।(7) एतिहासिक तथ्यों से यह प्रकट होता है कि जहॉ बनारस अपनी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति के लिए सम्पूर्ण देश में प्रसिद्ध था वहॉ पर इस नगर को मुस्लिम शासन काल के अन्तर्गत अनेकों आक्रमणों तथा विध्वंशों को झेलने के लिए बाध्य होना पड़ा। 1194 ई0 में मोहम्मद गोरी के एक सेनापति कुतुबुद्दीन एबक ने बनारस पर आक्रमण कर वहॉ के विश्वनाथ मंन्दिर सहित अनेक मंन्दिरों को नष्ट कर उनकी सम्पत्ति लूट लिया।(8) उसने 1197 ई0 में पुनः बनारस को विजित किया तथा वहॉ पर प्रथम मुस्लिम अधिकारी नियुक्त किया जिसने बनारस के धार्मिक ख्याति को नष्ट करने का प्रयास

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

किया।[9] मुसलमानो के आक्रमण का मुख्य केन्द्र विश्वनाथ मंदिर ही होता था। उन्होने मंदिरों के ध्वंशावशेषों से कई मस्जिदों का निर्माण कराया। इनमे ज्ञानवापी, बीबी रजिया तथा जौनपुर का अटाला मस्जिद प्रमुख है। वर्तमान समय मे भी यद्यपि जौनपुर की अटाला मस्जिद की स्थिति संतोषप्रद नही है फिर भी उसकी दीवारों में लगाए गए पत्थरों पर अनेकों हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियॉ है जो इस बात को स्पश्ट करती हैकि ये हिन्दू मंदिरों के अवशेष हैं। ऐतिहासिक सामग्रियो के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 1194 ई0 से लेकर 1669 ई0 तक मुसलमानों ने पॉच बार विश्वनाथ मंदिर को नष्ट किया।[10] 1672 ई0 में रीवा के राजा भवान सिंह एवं 1676 ई0 में उदयपुर के राजा जगत सिंह बनारस आकर विश्वनाथ की पूजा की। यह स्पष्ट करता है कि 1669 ई0 में प्राचीन मंदिर नष्ट होने के बाद भी विश्वनाथ की अराधना एवं मान्यता में कमी नही आयी थी। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगलों की स्थिती उत्तरोन्तर दुर्बल हो गयी। दूसरी ओर दक्षिण भारत में मराठे भाक्तिशाली होते गए जिसका प्रभाव बनारस पर पड़ना स्वभाविक था और यहॉ पर पुनः नए मंदिरो का निर्माण तीव्र गति से प्रारम्भ हुआ। मराठो के भाासन काल में बनारस नगर के घाटो तथा मंदिरो का अत्यधिक विकास हुआ।[11] इसी समय काशी के वर्तमान विश्वनाथ मंदिर का निर्माण 1777 में इन्दौर की विधवा महारानी अहिल्याबाई ने अपने राजपुरोहित जयराम भार्मा के आग्रह पर कराया ।[12] मंदिर निर्माण के प्रमुख कारीगर इंदौर से ही आए थे। इसलिये राज परिवार द्धारा इंदौर में निर्मित अन्य हिन्दू मंदिरों की तरह विश्वनाथ मंदिर भी दिखाई पड़ता है। इसके निर्माण पर दो लाख पैंतालिष हजार चार सौ पैंतिस रुपये व्यय हुए थे।[13] 1947 ई0 वहॉ के राज पुरोहित के माध्यम से कुछ धनराशि चढ़ावे के रुप में प्रतिवर्ष आती थी। वर्तमान समय में भी वहॉ के राज परिवार द्वारा एक ब्राहमण नियुक्त किया गया है जो प्रति दिन सायकाल सप्तर्षि पूजा के समय उपस्थित रहकर भगवान विश्वनाथ की पूजा करता है एवं वहॉ का प्रसाद राज– परिवार को भेजता है।[14] इस मंदिर में पूजा तथा व्यवस्था का कार्य 1777 ई0 से जयराम शर्मा तथा उसके परिवार के लोगों द्वारा वंश परम्परागत ढंग से होता रहा किन्तु आगे चलकर उनके परिवार के राम दत्त तथा गणेश दत्त दोनो भाई' निःसंतान मर गये। मंदिर की व्यवस्था उन लोगो की पत्नी इंद्राणी कुंवर और लखपति कुंवर के हाथ में आ गयी। फलतः मंदिर की व्यवस्था दयनीय हो गयी।

विशेषकर दयाल त्रिपाठी जो देवरिया जनपद के पिंडी तिवारी के रहने वाले थे। 1890 ई0 में वहॉ से आकर फकीरपुर वाराणसी में रहने लगे। विशषकर दयाल अपने समय के ख्यातिप्राप्त वैद्दय थे। उन्होने बंगाली टोला के वकील गौहरी बापू के सहयोग से न्यायालय में बनावटी रिश्तेदार के रुप में एक मुकदमा दाखिल हुआ जिसमें मंदिर की अव्यवस्था का उल्लेख किया गया। गौहरी बाबू के प्रभाव से न्यायालय ने मंदिर की व्यवस्था का भार विशेषकर दयाल को दे दिया तथा दोनों विधवाओं को 150.00 रुपये प्रतिमाह खर्च देना निश्चित कर दिया।[15] इस घटना

के पश्चात विश्वनाथ मंदिर की व्यवस्था जयराम भार्मा के परिवार से स्थानान्तरित होकर दयाल के परिवार में चली आइ।

दयाल की मृत्यु के पश्चात दयाल के बड़े प्रपौत्र उमाशकर महन्त हुए। 1916 ई0 तक इन्होने व्यवस्था संभाली। इनके काल में मंदिर की दशा उच्च कोटि की हो गई। 1916 ई0 में उमाशंकर की मृत्यु हो गयी फलतः उनक उत्तराधिकारी महावीर प्रसाद नियुक्त हुए।(16) 1936 ई0 में उमाशकर के लड़के लक्ष्मी शंकर ने मंदिर की व्यवस्था संभालनी चाही। फलतः परिवार के बीच मंदिर को लेकर मुकदमा प्रारम्भ हो गया। यह मुकदमा 1936–1944 तक चलता रहा। न्यायालय ने नागरकोट क्षेत्र के मैनेजर वीरअप्पन को मंदिर का कंट्रोलर नियुक्त कर दिया।(17)

वर्तमान समय में यद्यपि मंदिर पर संयुक्त परिवार का स्वाभित्व है फिर भी आए दिन मंदिर के चढ़ावे के बटवारे को लेकर उनमें संघर्श की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। मंदिर द्वारा जनता के हित में विश्वनाथ सनातन धर्म उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संचालित होता है। इसके अतिरिक्त मंदिर के मंध्य विजय" ाकर के अनुसार प्रतिदिन सायंकाल 'रास' का आयोजन होता है जिसमें 30–35 सन्यासी तथा विद्यार्थी भोजन करते हैं। मंदिर की आय का अधिकांश भाग महन्त के परिवार के लोगों के भरण पोषण में खर्च किया जाता है।

विश्वनाथ मंदिर का बनारस के सामाजिक जीवन पर प्रभाव :–

विश्वनाथ मंदिर का सामाजिक एकीकरण के क्षेत्र में महत्तवपूर्ण योगदान है मुस्लिम आक्रमणकारियों ने विश्वनाथ मंदिर को 5 बार तोड़ा था। विभिन्न समुदाय के लोग इतना सब कुछ होने के बाद भी विश्वनाथ की नगरी काशी से प्रभावित होकर धार्मिक एकता एवं विश्व बंधुत्व की भावना को प्रज्जवलित करते रहे।(18) वल्लभाचार्य के शिष्य रामानन्द ने यहॉ पर लोगों को शिवके साथ ही कृश्ण भक्ति की भी शिक्षा देकर विभिन्न देवताओं के समन्वयकारी स्वरुप की व्याख्या की। कबीर ने यहीं पर जीवन अधिकांश समय बिताकर हिन्दुओं तथा मुसलमानों में सामाजिक एकता लाने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होने दोनो संप्रदायों के धार्मिक अंधवि" वासों की आलोचना की। उन्होने विश्वनाथ के भक्तों व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया, एके" वर वाद की शिक्षा देकर। इसी प्रकार तुलसीदास आदि अनेको भारत प्रसिद्ध संतो तथा महात्माओं पर विश्वनाथ मंदिर का प्रभाव पड़ा है। विश्वनाथ मंदिर के विशेष आयोजनो में अन्नकूट का त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्यौहार कार्तिक भुक्ल के प्रथम दिन पर मनाया जाता ह।(19)

इस त्यौहार के पीछे एक एतिहासिक मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिवअपने वनवास का समय पूर्ण करके इस नगर में पुनः वापस आए थे।(20) इसलिए भगवान शिवके (विश्वनाथ) पुनः आगमन के उपलक्ष्य में इस त्यौहार का आयोजन होता है जो आज भी बनारस में अपना महत्वपूण स्थान रखता है। इस दिन लगभग लाखों

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

लोग बिना ऊॅच नीच के भेद भाव के विश्वनाथ मंदिर में दर्शनार्थ आते हैं।[21] जो बनारस तथा देश के अन्य भागो में भी सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

अन्नकूट के पश्चात दूसरा महत्वपूर्ण त्यौहार जो विश्वनाथ मंदिर से संबंधित है वह है महाशिवरात्रि। यह फाल्गुन वदी त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन विश्वनाथ मंदिर के साथ ही अन्य शिव मंदिरो में भी भगवान भांकर की पूजा बड़े धूमधाम से की जाती है। बनारस के 513 मंदिरो में जिनमें शिवकी प्रतिमा स्थापित है।[22] हजारों की संख्या में विभिन्न समुदाय के लोग शिव आराधना करतें है। विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की अपरिमित भीड़ एकत्रित हो जाती है। विश्वनाथ मंदिर के पण्डा के अनुसार उस दिन लगभग 2–3 लाख के बीच लोग एकत्रित होते है। सरकारी आंकड़ो के अनुसार एक लाख विभिन्न समुदायों की जनता दर्शनार्थ आती है।[23]

महाशिवरात्रि के एक मात्र (30दिन) पश्चात विश्वनाथ मंदिर में रंगभरी एकदशी का आयोजन होता है।[24] इस एकादशी को अमालिका एकादशी भी कहते है। इसमें गुलाल से भगवान विश्वनाथ की पूजा तत्पश्चात प्रसाद के रुप में अवशेष अबीर गुलाल को एक दूसरे के ऊपर ड़ालते हुए आनंदित होते हैं। इस उत्सव में सरकारी ऑकड़ो के अनुसार एक लाख लोग सम्मिलत होते हैं।[25]

बनारस विश्वनाथ मंदिर जहॉ अपनी धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओं के कारण सम्पूर्ण देश की जनता में सम्मान के साथ देखा जाता है और दर्शनार्थी इसमें आकर अपने जीवन की सार्थकता की अनुभूति करते है वहीं इसकी व्यवस्था में मध्यकाल से ही अनेकों कमियॉ भी हैं। इस मंदिर में कोई भी तीर्थयात्री जब प्रवेश करता है मंदिर की व्यवस्था का उसे प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता ह। प्रायः गौदोलिया चौराहे से दशास्वमेघ घाट के बीच से गुजरने वाले मार्ग में हीं भंडर यात्रियों के पीछे लग जाते है।[26]

इसी प्रकार मंदिर में मूर्ति पुजाने निकला भंडर हर मूर्ति के सामने रुकता है। पुजारी के मुख से आ" ीर्वाद या हाथ उठाकर संकेत '' अपनी श्रृद्धा क चढ़ा दो'' कम से कम का आग्रह कर अधिक की ओर संकेत करता है। पुजारी और भण्डर के बीच घिरने के बाद बिरले ही अभिमन्यू सिद्ध होते हैं। यात्री कितनी भी दक्षिणा चढ़ाए पहले लौटा दी जाती है। पुजारी का निर्विकार रुप तब तक यात्री के चढ़ाए की तुच्छता में बदल चुका होता है। ' और नही है इतना रख लें यही भक्ति है' की आवाज के साथ में ऐसा था तो घर पर ही रहते तीर्थ यात्रा पुण्य युक्त में थोड़े मिलता है' के उपदेश के साथ पुजारी उपेक्षापूर्वक दक्षिणा एक तरफ रख देगा तथा यात्री के हटते ही उसे सहेज लेता है।

इन कमियो के बाद भी यह मंदिर नगर की सांस्कृतिक तथा सामाजिक एकता के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता चला आ रहा है। यही कारण है कि विश्वनाथ मंदिर मान्यताओं तथा नगर की सांस्कृतिक स्थिती से प्रभावित होकर प्रसिद्ध फांसीसी इतिहास लेखक एम0ए0 भोयरिंग ने बनारस की तुलना पेरिस से करते हुए लिखा है जिस प्रकार पेटिस योरप की बौद्धिक प्रतिभा का नेतृत्व करता है उसी प्रकार बनारस अपनी बौद्धिक प्रतिभा रखता है। ऐसे नगर विश्व में कुछ ही है।[27] इसी प्रकार वियना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हावर्ट पौलोने भी बनारस को सामाजिक उत्थान एवं सभ्यता का प्रमुख केन्द्र बताया है।[28] इस प्रकार एतिहासिक तथ्यों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि जहॉ भगवान विश्वनाथ की नगरी काशी अपनी भौगोलिक स्थिति एतिहासिक पृष्ठभूमि एवं धार्मिकता के दृष्टि से मानवता को सभ्यता के मार्ग पर लाने को महत्वपूर्ण कार्य किया है वही विश्वनाथ मंदिर के इतिहास ने सामाजिक उत्थान एवं धर्म के आचरण में मानव के नैतिक स्तर तथा विश्वबंधुत्व की भावना को उत्तरोत्तर विकसित करने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

(1) ई0 वी0 हैवेल, बनारस द सेक्रेट सिटी, लन्दन 1905, राडेविस बुद्धिश्ट इंडिया लन्दन 1903, पृ0 सं0 24।
(2) 1974 वर्ल्ड पापुलेशन इयर पृ0 8–12, कुबेरनाथ भुक्ल, बनारस डाऊन द एजेज, पृ0 18–20।
(3) वेद में सर्वप्रथम बनारस के लिए काशी भाब्द का प्रयोग हुआ है, कुबेरनाथ भुक्ल, बनारस डाऊन द एजेज, पृ0 15।
(4) द चेकर्ड हिस्ट्री ऑफ द गोल्डेन तेम्पुल ऑफ द काशी विश्वनाथ पृ0 3।
(5) स्कन्दपुराण अध्याय 97।
(6) जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, खण्ड 31, पृ0 121–125।
(7) कुबेरनाथ भुक्ल, वाराणसी वैभव, पृ0 20–30।
(8) के0 वी0 भुक्ल, बनारस डाऊन द एजेज, पृ0 154, रमा" ंकर त्रिपाठी द चेकर्ड हिस्ट्री ऑफ द गोल्डेन टेम्पुल ऑफ द काशी विश्वनाथ पृ0 2–3।
(9) इलियट एंड डाऊसन, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खण्ड 2, पृ0 322–324।
(10) विश्वनाथ मंदिर के महंत से प्राप्त रिकार्ड।
(11) 1974 वर्ल्ड पापुलेशन ईयर पृ0 11।
(12) विश्वनाथ मंदिर में अंकित शिलालेख।
(13) मंदिर के महन्त से प्राप्त विवरण के आधार पर।
(14) विजय भांकर त्रिपाठी, महन्त विश्वनाथ मंदिर से साक्षात्कार।
(15) वी/ एस इंद्राणी कुंवर एवं लखपत कुंवर, जिला कलेक्ट्रेट रिकार्ड रुम वाराणसी।
(16) विश्वनाथ मंदिर के महन्थ विजय" ाकर द्वारा प्रस्तुत वा" ायत वही।
(17) मंदिर के महन्थ के पास उपलब्ध न्यायालय के कागजात।
(18) विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बनारस।
(19) उत्तर प्रदेश 1975 पृ0 50।
(20) कुबेरनाथ भुक्ल, वाराणसी डाऊन द एजेज पृ0 249।
(21) उत्तर प्रदेश 1975 पृ0 50।
(22) कृतिकल्पतरु, पृ0 46–117, बनारस डाऊन द एजेज पृ0 165–67।
(23) उत्तर प्रदेश 1975 पृ0 50।
(24) ई0 वी0 हेवेल बनारस, द सेक्रेट सीटी ऑफ द हिन्दुज।
(25) उत्तर प्रदेश 1975 पृ0 50।
(26) भण्डर पण्डों के ममास्ते होते है मतलब दलाल, यात्रियों का आर्थिक शोषण करते हैं।
(27) डा0 राजवली पाण्डेय, हिस्ट्री ऑफ हिन्दुइज्य, पृ0 71।
(28) एम0 ए0 भौयरिंग, सेक्रेट सीटी ऑफ द हिन्दूज पृ0 7।